विशुद्ध राष्ट्रवाद को समर्पित प्रमुखतः विचार पाक्षिक

शुल्क आदि सहयोग देकर, 'हिन्दु अस्मिता' को अधिक सशक्त एवं प्रभावी बनाने में अपना योगदान दीजिए। धन नकद/मनीआर्डर/बैंक-ड्राफ्ट द्वारा निम्न पते पर ही भेजिए:-

वार्षिक शुल्क रुपया चालीस। संस्था, संगठन, ग्रन्थालय, वाचनालयों के लिए सुविधा शुल्क वार्षिक रुपया तीस केवल।

विक्रम गणेश ओक

१६, एम आय जी. (शॉप कम रेसीडेन्स) नन्दानगर, मेनरोड़ इन्दौर (म प्र.), ४५२००८

वर्ष १ अंक ६, शुक्रवार, श्रावण कृष्ण ७, संवत् २०४८/शके १९१३ दि १६ अगस्त १९९१ संपादक विक्रम गणेश ओक (विक्रमसिंह) पृ. ४, मूल्य १.५० पैसे वार्षिक रू. ४०/-

बस अयोध्या ही ! या मथुरा काशी भी

विगत चुनावों के समय राम जन्मभूमि का जो प्रश्न देश की राजनीति के रंगमंच पर असाधारण रुप से प्रभावी बना हुआ था वह आज नेपथ्य में चला गया प्रतीत होता है। तथापि नाटक का पटाक्षेप होने तक वह रंगमंच पर पुनः-पुनः आता ही रहेगा दृश्यपरिवर्तन होते रहेंगे। अब आगामी दृश्य निश्चित रुप से कौनसा होगा यह तो सूत्रधार ही बता सकता है और राजनीति के इस प्रकार के नाट्य का सूत्रधार अन्य कोई न होकर पराशक्ति ही होती है। फिर भी अवलोकित दृश्यों के आधार पर संभावित दृश्यों की बहुत कुछ कल्पना तो की ही जा सकती है। और जो परिकल्पना इस विषय में की जा सकती है वह यही बताती है कि घनघोर घटाओं की जलधाराओं से निर्मित हरियाली भरी नवसृष्टि के साथ ही यहां-वहां जलाप्लावन की ऋतु के प्रस्थित होने पर जब देवता अपने चार मास के विश्राम के उपरान्त जागेंगे, लगभग उसी के आसपास एक असाधारण वात्याचक्र का दृश्य सम्मुख होगा। इसका उद्भव-बिन्दु कहां होगा यह बताना अत्यंत कठिन होने के साथ ही वह एक प्रकार से किसी पक्ष पर आरोपण ही होगा। पर जो कुछ भी होगा वह ११ जुलाई ९१ को महामहिम राष्ट्रपति के संसद की दोनों सभाओं के समक्ष दिये अपने भाषण में १५ अगस्त १९४७ की तिथि को धार्मिक स्थलों के संबंध में यथास्थिति की पाषाण-रेखा बनाने के संबंध में कानून बनाने तक ही सीमित नहीं रहेगा। जहां एक ओर श्रीराम जन्मभूमि मुक्तियज्ञ समिति के महामंत्री दाऊ दयाल खन्ना ने राष्ट्रपति की इस घोषणा को 'दुर्भाग्यपूर्ण और खतरों से भरी' बताने के साथ ही इससे जन-क्रान्ति होने की भविष्यवाणी की है। वहीं ३ अगस्त को राजधानी दिल्ली में आयोजित आल इण्डिया मुस्लिम सलाहकार सम्मेलन में उत्तरप्रदेश बाबरी मसजिद एक्शन कमेटी के अध्यक्ष मौलाना मुजफ्फर हुसैन कछौछवी ने अपनी तकरीर में देश को आव्हान देते हुए कहा है कि "जिस दिन बाबरी मसजिद गिरेगी हिन्दुस्तान में कोई भी मंदिर नहीं बचेगा"। इसे कोई कछौछवी की मात्र लफ्फाजी न समझे इसीलिए उन्होंने अपनी तकरीर में आगे मुसलमानों का आवाहन करते हुए यह भी कहा कि "यहां आए लोगों से मैं कहता हूँ कि जैसे ही बाबरी मसजिद गिराने की खबर आए गांव, कस्बों, शहरों, जिलों, सूबों में सारे मन्दिर गिरा दो। वे कहां-कहां पुलिस भेजेंगे। हम जान दे सकते हैं। पर बाबरी मसज़िद की एक ईंट नहीं दे सकते। हमें जालिमों से मुकाबले के लिए तैयार होना है। जो भी हुकूमत है चैलेंज करना है कि हम इस मुल्क में हिस्सेदार हैं। हमें हिस्सा मिलना चाहिए"। हिन्दू समाज कुम्भ मेलों जैसे आन्दोलन से कितना कुछ सचेत सक्रिय होता है-यह बताने की आवश्यकता नहीं। पर मजहब के नाम पर 'अल्लाह अकबर' का नारा बुलन्द करते हुए मुसलमान को अपने घर-परिवार से बड़ी ही सरलता से बाहर निकाला जा सकता है।

कछौछवी की तकरीर के अनुसार बुतशिकनी की इस नया डायरेक्ट एक्शन का दिन निश्चित नहीं किया गया है। पर जब खुला एलान किया गया है तो यह तो समझना ही चाहिए की तैयारी चालू हो चुकी है। कार सेवा समिति ने अयोध्या में आयोजित २१ जुलाई के हिन्दु धर्माचार्यों के संत सम्मेलन में केन्द्र सरकार को रामजन्मभूमि मन्दिर निर्माण में आने वाली बाधाओं को दूर करने हेतु १८ नवम्बर १९९१ अर्थात प्रबोधिनी एकादशी तक का समय दिया है। अर्थ स्पष्ट है कि इस समय सीमा के समाप्त होते ही जो भी स्थिति हो रामजन्मभूमि मुक्तियज्ञ समिति मन्दिर निर्माण हेतु कारसेवा का पुनरारम्भ करेगी। और यदि हिन्दु-मुस्लिम समाजों के सक्रिय नेता और शासन इन तीनों पक्षों में उस समय सीमा तक कोई सहमति नहीं होती तो संघर्ष की सम्भावना है। इसका यह अर्थ नहीं की जो भी कुछ होगा वह निश्चित रुप से निर्णायक ही होगा। क्योंकि विवाद से सम्बन्धित सभी पक्ष संघर्ष को टालने और अपने-अपने हिस्से में अधिक से अधिक जितना प्राप्त हो सकता है उसे बंटोरने की नीति के अनुसार ही अपने पग बढ़ाने की राजनीति चल रहे हैं। वस्तुतः विगत चुनावों तक भाजपा-संघ परिषद् संयुक्त परिवार ने इसे चुनावी मुद्दा बनाकर जहां एक और जनतांत्रिक पद्धति से इस कार्य को सम्पन्न करने का उद्देश्य रखा वहीं उसके साथ सत्ता प्राप्ति का स्वार्थ भी रखा था। चंचला राजनीति ने भासंप के इस संयुक्त परिवार का वह सपना बिखेर अवश्य दिया तथापि उत्तरप्रदेश में उसे सत्ता सौप कर धर्मयुद्ध में अडिग रहने की स्थिति निर्मित की और जनादेश भी दिया। ज्ञातव्य है कि संयोग से उत्तरप्रदेश ही वह राज्य है जिसकी सीमा में वे तीनों मन्दिर-अयोध्या, मथुरा और काशी है। और मात्र इनकी ही मुक्ति तक की पीछे हाट को भासंप संयुक्त परिवार ने युद्ध छिड़ने के पहले ही दुर्भाग्य से स्वीकार कर लिया था। इस संयुक्त परिवार के सदस्य भाजपा के राष्ट्रीय नेता अटल बिहारी बाजपेयी ने अगस्त ८९ में साम्यवादी नेता हीरेन मुखर्जी को लिखे अपने पत्र में हिन्दुओं के मात्र रामजन्मभूमि की मांग तक ही सीमित रहने की बात की थी तो विगत वर्ष १३ अगस्त को जन्माष्टमी पर भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने राजधानी दिल्ली में एक प्रकट कार्यक्रम में घोषणा कर दी थी कि "यदि मुस्लिम नेता अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिये सहमत हो जाय तो वे काशी और मथुरा के विवादास्पद धर्मस्थलों जहां कि आज भी नमाज अदा की जाती है, से मसजिदें हटाने पर जोर नहीं देंगे और भाजपा विश्व हिन्दू परिषद् और रा. स्व संघ से यह कहेंगे कि वे धर्मस्थलों को मुक्त कराने की बात अयोध्या के विवादास्पद धर्मस्थल (जहां १९३६ से नमाज नहीं पढ़ी गई) से आगे न बढ़ाये। भाजपा के नेताद्वयों की इस अदूरदर्शिता पूर्ण घोषणा से पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए ही केन्द्र में सत्तासीन होते ही कांग्रेस ने २६ जनवरी १९५० की अपनी पूर्व की समय सीमा रेखा को १५ अगस्त १९४७ तक पीछे खसकाया और इस कूटनीतिक दांव को चलाकर जहां भाजपा को किंकर्तविमूढ़ और मौन बना दिया वहीं विहिप रा स्व संघ और भाजपा में आपस में विवाद की स्थिति निर्मित कर दी है। कल आडवाणीजी ने सोमनाथ से अयोध्या रथयात्रा करते हुए कारसेवा का नेतृत्व अपने हाथ लेकर धार्मिक स्वतन्त्रता के प्रश्न को राजनीति के रणक्षेत्र में उतार, विश्वनाथ प्रतापसिंह तथा अन्य धर्मनिरपेक्षवादी शक्तियों को चकित कर दिया था तो आज १५ अगस्त १९४७ की तिथि को यथास्थिति रेखा बनाने की घोषणा कर कांग्रेस ने भाजपा को धर्मसंकट में डाल दिया है। और एक प्रकार से भाजपा-परिषद्-संघ परिवार को ललकारा है। इसी का परिणाम है कि भाजपा के प्रचारक बने पत्रकार गिरिलाल जैन ने संभावित स्थिति को पूर्व में ही सूंघते हुए यह लिख मारा कि भले ही उत्तरप्रदेश में भाजपा सत्तासीन हो पर "जन्मस्थान पर मन्दिर निर्माण उत्तरप्रदेश का मामला नहीं है। यह सारे राष्ट्र का विषय है राम सिर्फ उत्तरप्रदेश के प्रतीक नहीं है। तथापि संघर्ष से जुड़े महन्त अवैद्यनाथ आदि सन्त-महन्त भाजपा के इस रणछोड़दासजी नीति से कदापि सहमत हो नहीं सकते। राजनीति की माया के वशीभूत हो ये धर्मात्माएं तीस हजार धर्मस्थलों को विस्मृत करने की पीड़ा को सह रहे हैं और मात्र तीन पर रुक गये हैं। पर उनके लिये भी जीवट के साथ संघर्ष करने की उनकी मनोभावना उनके द्वारा प्रकट किये गये विचारों में नहीं झलकती यह दुर्भाग्यपूर्ण अवश्य है। फिर भी ये सन्त-महन्त मात्र राजनीतिक बहाना बना कर अयोध्या काण्ड को भी पोथी में बन्द कर रखने को तैयार हो जायेंगे इस पर कोई विश्वास नहीं कर सकता।

(शेष पेज २ पर)

"जब इस स्वराज्य में प्रत्येक धर्मपन्थ के स्वत्व की रक्षा होनी है, तो फिर उसमें हिन्दु धर्म के स्वत्व की रक्षा भी उचित परिमाण में एवं यथान्याय क्यों नहीं होनी चाहिए? इतना ही नहीं तो हिन्दुस्थान की जनसंख्या में जो दो बटा तीन की संख्या में है उन हिन्दुओं का स्वत्त जिस स्वराज्य में अन्य अतिअल्प या अल्प संख्या वाले अहिन्दु समाज के स्वत्व की बेहिसाब मांगों पर बलि चढ़ा दिया जाता हो, तो वह यथार्थ में स्वराज्य हो ही नहीं सकता! .... हम हिन्दु के रुप में स्वतन्त्र होना चाहते हैं और हिन्दुत्व भी बनाये रखना चाहते हैं। हमारे लिए तो सही स्वराज्य वही होगा जिसमें हमारा हिन्दु स्वत्व अबाधित रहेगा।"

—वीर सावरकर

सौजन्य की प्रतिमूर्ति का तिरोहन !

गुरुवार १८ जुलाई को बेरिस्टर श्रद्धेय श्री गणेशशंकर गंध्ये का पुणें में देहावसान हुआ। जीवन के नौ दशक पूर्ण कर दसवें दशक में प्रवेश के साथ ही दाजीसाहब रूग्णशैया पर ऐसे लेटे कि उठ न सके। सन् १९०० की भाद्रपद शुक्ल श्री गणेश चतुर्थी के मंगल दिवस पर जन्म लेने वाले इस श्री गणेश के चैत्र कृष्ण चतुर्थी सोमवार ४ मार्च १९९१ को हमने पुणें में जो दर्शन किये वे अन्तिम होंगे इस प्रकार की अशुभ कल्पना तो तब मन-मानस में नहीं थी। तथापि रूग्णशैयासीन उनकी अशक्त और असहाय देह देख कर मन व्यथित हुआ था। मन को व्याप्त करने वाली यह व्यथा और सुख यहीं तो माया है, इस शाश्वत सत्य को जानते समझते हुए भी हम सब सामान्य मानव उस सुख-दुःख से, उनके भोगकाल में मुक्त नहीं होते। इसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक अपनत्व वशात् किसी व्यक्ति से होने वाला लगाव और दूसरे किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत गुण-व्यवहारों का प्रभाव! आवश्यक नहीं कि सभी लोगों के परस्पर-व्यवहारों में ये दोनों ही ही कारण विद्यमान हो। पर जहां तक गंध्ये साहब का और हमारा संबंध है यथार्थ में ये दोनों ही कारण विद्यमान रहे। हमारे परिवार की उनके परिवार से लौकिक अर्थ में कोई नाते दारी तो थी नहीं फिर पता नहीं क्यों, पर हमारे संबंधों में एक प्रकार से अपनत्व का 'भाव' था। और गंध्ये साहब के गुण-व्यवहार से तो अनगिनत लोग प्रभावित थे। हम भी उन्हीं में थे १९५२ के अर्थात् स्वतन्त्र भारत के प्रथम सामान्य निर्वाचन में वह देवास-क्षेत्र से लोकसभा हेतु हिन्दु महासभा के प्रत्याशी थे और उनके प्रचार हेतु हम उस क्षेत्र में गये थे। तब से अब तक इतने सुखद और विशेषकर बोधप्रद संस्मरण मन-मानस पर अंकित है कि सार्वजनिक क्षेत्र से सम्बन्धित किसी एक व्यक्ति ने हमारे मानस पर इतना अधिकार नहीं पाया हो।

१० मई १८५७ का दिवस भारतीय स्वाधीनता संघर्ष का सुमुहूर्त-दिवस माना जाता है। सन् १९५३ के इसी पावन दिवस पर बेरिस्टर श्री गणेश शंकर गंध्ये के नेतृत्व में मध्य भारत हिन्दू महासभा के "काश्मीर मुक्ति सत्याग्रहियों" का दूसरा जत्था इन्दौर से प्रस्थित हुआ था। इस जत्थे में एक सत्याग्रही हम भी थे! मध्यभारत क्षेत्र में प्रचार करते हुए जत्था १६ मई को राजधानी दिल्ली पहुंचा और इन्दौर से साथ ही चल रहे पर हमारे लिए अज्ञात गुप्तचर विभाग के व्यक्ति ने राजधानी की पुलिस व्यवस्था को हमारे आगमन की सूचना दी और हमें नई दिल्ली-स्थानक पर बंदी बना लिया गया। प्रशासन की किसी अव्यवस्था के कारण जब घण्टों वाहन उपलब्ध नहीं हुआ तो अत्यन्त विवश होकर हमारे सत्याग्रही जत्थे का पथ संचलन नई दिल्ली रेल्वे-स्थानक से पहाड़गंज पुलिस स्टेशन पहुंचा। सत्याग्रह की गांधीवादी प्रणाली से प्रभावित गंध्ये साहब ने रेल्वे-स्थानक पर ही हमें सूचित कर दिया था कि जब प्रशासन द्वारा हम बंदी बनाये गये हैं तब हमें शांत और मौन बने रहना है। परिस्थिति-वशात् हमारे युवारक्त के लिए यह संयम अशक्य था और सहसा उक्त पथ संचलन का नेतृत्व हम कर रहे थे। पहाड़गंज पुलिस थाने के अन्दर प्रवेश करते ही प्रशासन-व्यवस्था की असफलता का रोष वहां उपस्थित अनेक पुलिस अधिकारियों ने विशेष रूप से उक्त जत्थे का नेतृत्व करने वाले हम पर उतारा और उनके साधन अपशब्दों तक ही सीमित नहीं रहे तो हाथ, पैर में चढ़े हुए जूते और बन्दूकों के कुन्दे का उन्होंने खुलकर प्रयोग किया था। पुलिस की मार की विशिष्ट शैली का अनुभव हमने तब ही प्राप्त किया। गांधीवादी सत्याग्रह प्रणाली में विश्वास रखने वाले गंध्ये साहब यह सब देख रहे थे। पर उनका मौन तब टूटा जब पुलिस ने अत्याचार का एक और सोपान चढ़ते हुए हमें शौच जाने की अनुमति, नहीं दी। अब गंध्ये साहब ने थानेदार को अपना परिचय दिया कि वह बेरिस्टर है और पुलिस प्रशासन को मानव के शरीर धर्म पर इस प्रकार रोक लगाने का कोई अधिकार नहीं" है और इस अन्याय को वह अब सहन नहीं करेंगे! तब का गंध्ये साहब का क्रोधित मुख मण्डल आज भी हमारी दृष्टि के सम्मुख आ ही जाता है।

अपराह्न में हम लोगों को पुलिस थाने से राजधानी के तिहाड़ कारागर ले जाया गया। कारागर में पहले से ही सैकड़ों सत्याग्रही थे। इनमें मध्यभारत हिन्दू महासभा के प्रथम सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व करने वाले हमारे पूज्य पिताश्री गणेश वासुदेव ओक भी थे। अनेक सत्याग्रहियों के साथ स्वागत करने वह आगे बढ़े थे कि पुलिस की मार से पिटा हुआ हमारा काला-नीला मुखमण्डल देख कर हतप्रभ से रह गये। और जब उन्हें घटना की जानकारी प्राप्त हुई तो उनके 'पितृत्व ने गंध्ये साहब पर रोषपूर्ण प्रश्नों की झड़ी सी लगा दी। पर गंध्ये साहब शांत मौन रहते हुए सब सुनते रहे। जब हमने पिताजी को बताया कि जब पुलिस का अनावरण घोर अमानवीयता तक जा पहुंचा तो गंध्ये साहब ने एक प्रकार से उसका प्रबल प्रतिकार किया था। तब कहीं जाकर पिताश्री का रोष मंद पड़ा। इस असाधारण विचित्र प्रसंग को ताप में हम तीनों के संबंधों के कण विस्खलित नहीं हुए, तो अधिकाधिक सघन ही हुए!

गंध्ये साहब के ध्येय निष्ठ, शांत, सौजन्यपूर्ण व्यवहार से हम ही नहीं तो हमारे समान ही न जाने कितने प्रभावित हुए होंगे! कहा जाता है कि 'अभाव' मूल्य के जनकों में से एक है! साम्प्रति ध्येय निष्ठा, प्रामाणिकता और सौजन्यपूर्ण व्यवहार जैसे तत्वों से हमारा समाज तीव्र रूप से अभावग्रस्त है। गंध्ये साहब तो मानों 'सौजन्य की प्रतिमूर्ति' थे और वर्तमान युग तो मराठी के एक नाटक के नामाभिदान "सौजन्याची ऐशी तैशी" अर्थात् 'सौजन्य की ऐसी की तैसी' को सार्थक करने वाला है। दुर्भाग्य से आज सौजन्य दुर्लभ होता जा रहा है और सौजन्यपूर्ण व्यवहार करने वाले को एक प्रकार से दुर्बल माना जाता है। निश्चय ही यह समाज के अस्वास्थ्य के निदर्शक लक्षण हैं। समाज में अपराध-बोध मानो निशेष हो चुका है। मुद्रा के अव-मूल्यन की तो उसे चिंता है क्योंकि, उससे उसका भौतिक सुख तत्काल ही विपरीत रूप से प्रभावित होता है। तथापि जीवन मूल्यों की प्रवाह पतितता से हम किंचित्मात्र भी चिंतित नहीं। राज्य या शासन या प्रशासन न तो कभी समाज जीवन मूल्यों का निर्माण कर सका है, न उसकी रक्षा कर सका है या कर सकेगा! तथापि उसी राज्य या शासन को शासनाधिष्ठित बन कर या विपक्ष बन कर प्रभावित करने के दायित्व के साथ जो लोग राजनीति के क्षेत्र में प्रविष्ठ हुए हैं, उनमें ध्येय निष्ठा, कर्म निष्ठा नाम को न हो और वे दलबदल जैसे खेल खेलकर राजनीति को स्वार्थसिद्धि का अखाड़ा बनाये। उनमें प्रामाणिकता और सौजन्य न हो और वे अहंकारी तथा निरंकुश बने तो राज्य-शासन-प्रशासन के स्वस्थ और समाज हितैषी बनने की कल्पना करना मूर्खों के स्वर्ग में विचरण करने के समान ही है। गंध्ये साहब हिन्दुत्व-हिन्दुराष्ट्र के प्रति पूर्ण और सतत निष्ठावान रहे। "मैं स्वयं को हिन्दू क्यों कर कहलाऊं" जैसे लेख लिख कर उन्होंने हमें सैद्धांतिक मार्गदर्शन दिया तो "आज के निर्वाचनों को धन-शक्ति के जाल से किस प्रकार मुक्त किया जा सकता है" जैसे लेखों द्वारा धनशक्ति के चक्रव्यूह को भेदने का व्यवहारिक पद्धति बतायी। हिन्दू महासभा के हिन्दुत्व दिशादर्शन स्वर्ण-जयंती अवसर पर उन्होंने हमें "हिन्दू संगठन की दिशा" दी। पर अपराध-बोध से ग्रसित हमारा मानस कहता है कि हमने उसकी अनदेखी-अनसुनी की। हम जयकारा वीर सावरकर का करते हैं पर आचरण भर गांधीजी के तीन बन्दरों सा होता है हमारा! हमारी आग उगलने वाली वक्तृता और तीखी लेखनी तात्कालिक रूप से एक सीमित वर्ग को प्रभावित करती अवश्य है। पर उस सीमित वर्ग तक को हम स्थायी रूप से प्रभावित कर नहीं पाते। क्योंकि हम कर्मण्यता से दूर बहुत दूर हैं!

साम्प्रति जो कुछ है वह दुःखद है। हिन्दुत्ववाद का झण्डा थामने पर गर्व करने वाले हम उपेक्षित ही क्यों सर्वथा नगण्य से बन गये हैं। इस अवस्था के लिए हम यदि दूसरों को दोष दे तो वह मात्र आत्मघात ही होगा। यह आत्मघात प्रकट आत्महत्या भले ही न कहलायी जाती हो पर वह प्रच्छन्न आत्महत्या के अतिरिक्त कुछ भी नहीं! इस राष्ट्र के हित 'हिन्दु अस्मिता' को जगाना अत्यन्त आवश्यक है पर अकर्मण्यता से तो वह सम्भव नहीं! अतः हमें चाहिए कि हम अपने स्वीकृत पवित्र सिद्धांतो के प्रति प्रामाणिकता से समर्पित हो जाय और कर्मठता को अपनाये। इसी आचरण में बेरिस्टर पूज्यनीय श्री गणेश शंकर गंध्ये की आत्मा के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धान्जलि होगी न कि दुःख, भावुकता और सम्मानजनक शब्दाडंबर से रचे-बसे उद्‌बोधन या लेखन से! जय हिन्दुराष्ट्र

(शेष पेज १ का)

विपक्ष से चलकर सत्ता की कुर्सी पर विराजमान होने के कारण उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री कल्याणसिंह दिल्ली की कूटनीति के सामने नरम पड़ गये है, वह कभी बाबरी मस्जिद का ढांचा पुराना होने से कायम नहीं रह सकने की बात करते है तो कभी मुसलमानो से पैकेज डील के लिए चर्चा की तैयारी बताते है तो कभी हिन्दुओं की ओर से करोड़ों की लागत से अन्यत्र बाबरी मसजिद बनवा देने के आश्वासन देते है। पर हाल यह है कि उन्हीं के घर में आज उनको घेरा जा रहा है। और नौकरशाही के जाल में फंसे होने की चिंता को उछाल कर उन्हें आरोपित किया जा रहा है। इस प्रकार भाजपा को कांग्रेसी-चरित्र की छूत लगने से रा. स्व संघ नेता चिन्तित हो उठे हैं। पर जहां तक मूल मुद्दे का प्रश्न है रा स्व संघ का व्यवहार भी चौंकाने वाला है। ७ जुलाई ९१ को नागपुर में संपन्न रा. स्व संघ अ. भा. कार्य समिति ने भाजपा की उत्तरप्रदेश विजय को जनादेश बताते हुए मात्र श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण तक ही अपनी मांग को सीमित रखा है। संसद के दोनों सदनों में जहां सत्तासीन और विपक्ष में बैठे हुए धर्मनिरपेक्षतावादी दलों के प्रतिनिधि एक होकर १५ अगस्त १९४७ की बात बड़े हल्के फुलके ढंग से छेड़ रहे हैं वहीं भाजपा-परिषद् के सांसदों का जुझारुपन जाता रहा है। श्री विनय कटियार, श्री बैकुंठलाल शर्मा प्रेम जैसे इक्के दुक्के उदाहरण छोड़ दे तो श्रीमती विजयाराजे सिंधिया के इस प्रकार के तर्क कि, "जब राम का जन्म हुआ था, तब हिन्दू जैसा (कोई शब्द नहीं था" । और साथ ही साथ ही सदन में अपने ही दल भाजपा के सदस्यों से यह निवेदन करना कि 'वे इस मामले पर आग नहीं उगले' यही स्पष्ट करता है कि भाजपा मंदिर मुक्ति के प्रश्न पर ढीली पड़ गयी है। कुल मिलाकर स्थिति यह बनती जा रही है कि मुस्लिम दंगे जैसे हिंसक उपद्रवों के दबाव से या उसके बिना जैसा भी हो नेताओं को सौदेबाजी में पचास सौ करोड़ रुपया हिन्दुओं के खाते से मुसलमान के खजाने में जाकर अयोध्या में ही एक बाबरी मसजिद नहीं तो एक जबरदस्त इस्लामी केन्द्र बनाया जायेगा और व्यावहारिक राजनीति के मैदान में 'ऐसा ही होता है' कि पट्टी पढ़ाकर भाजपा के दिग्गज विहिप के साधु संतों की पाद्य पूजा कर उन्हें वापस भगवत्-भक्ति और संकीर्तन में लीन होने की विनय करेंगे।

हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि भाजपा के दोनों वरिष्ठ नेताओं ने 'मात्र रामजन्मभूमि और अन्य कोई मंदिर नहीं की आत्मघाती बात कर हिन्दुओं का पक्ष दुर्बल बना दिया था और उससे लाभ उठाकर कांग्रेसी सत्ता ने अब सीधे १५ अगस्त १९४७ की सीमा-रेखा का पांसा फेक दिया है। स्वाधीनता पूर्व से हिन्दुओं की धार्मिक स्वतन्त्रता हित सक्रिय रहने वाली हिन्दू महासभा ने देश के स्वतन्त्र होने पर न्यायालय के द्वार खटखटाये और विधिवत जनतान्त्रिक आन्दोलन चलाकर विदिशा के विजया मंदिर प्रकरण में सफलता भी प्राप्त की। आज वह न्यायालय में डटी हुई है। पर केवल रामजन्मभूमि के लिए ही समस्त धर्मस्थलों के लिए, हिन्दुजन में एक व्यवस्थित जनतान्त्रिक आन्दोलन चलाने में वह कतई उत्सुक नहीं है। इसीलिए हिन्दुओं को चाहिए कि वर्तमान में संघर्ष के मैदान में होने वाले भाजपा-विहिप-रा स्व संघ संयुक्त परिवार को स्पष्ट आदेश दे कि केवल रामजन्मभूमि ही नहीं, तो मात्र प्रथम चरण के रूप में अयोध्या मथुरा काशी भी! और तदनन्तर तीस हजार या जितने भी वे धर्मस्थल हो जिन्हें भूतकाल में कभी, किसी ने भी भ्रष्ट किया है उनका पुनरुद्धार हमें करना है– राजनीतिक स्वतन्त्रता रूपी साधन से धार्मिक स्वतन्त्रता रूपी साध्य हमें प्राप्त करना है! यहां हिन्दुत्व का हिन्दू मात्र को आदेश है!

—रामशास्त्री

'हे राम ! तुम ही जानत पीर हमारी लेखमाला की तीसरी कड़ी

हिन्दुराष्ट्र में आपका स्वागत है !

आन्ध्रप्रदेश में भाजपा ने अपने संघ-परिवार के सहोदरों की सहायता से व्यवस्थित और व्यापक प्रचार-प्रसार की चेष्टा की और अपने वोट प्रतिशत को २.१० से ८.८० तक बढ़ाकर एक प्रकार से सफलता भी प्राप्त की। यदि हम १९८४ की स्थिति को देखे तो तेलगु देशम् के प्रभु एन टी रामाराव की कृपा से प्राप्त १ सीट के बीज को १९८९ में वह अंकुरित नहीं कर पायी फिर भी १९९१ के चुनाव में सिकन्दराबाद सीट पर ८५,००० वोटों से मिली विजय और इत्तेहादुल मुसलमीन के सुल्तान सलाउद्दीन ओवैसी द्वारा तमाम भ्रष्टाचारों से जीत हासिल कर भाजपा के खाते में डाली गयी पराजय, भाजपा के लिए गौरवशाली ही है और एक सीमित क्षेत्र में बहने वाली रामलहर का प्रमाण है।

असम में भाजपा द्वारा २ लोकसभा सीटो और १० विधानसभा सीटों पर अधिकार करना अपने आप में एक आश्चर्य है। वस्तुतः असम की चारों दिशाओं के राज्यों में भाजपा सर्वथा नगण्य है और असम में उसके कार्य विस्तार की शेष भारत को कोई जानकारी भी नहीं। निश्चय ही भाजपा का यह विजय क्षेत्र बराक घाटी वाले, कछार, करीमगंज और हैलाकाण्डी जिले में ही सीमित है। और इसलिए कहना होगा कि, असम में भाजपा की छोटी सी सफलता उसके सुनियोजित कार्य निर्धारण और संचालन की बड़ी भारी सफलता है भाजपा ही नहीं तो अन्य दलों के लिए एक आदर्श है। पड़ौस के बांग्लादेश से होने वाली घुसपैठ के वर्तमान प्रभावों और संभावित भावी प्रभावों को हिन्दुओं में प्रभावी ढंग से प्रचारित कर भाजपा ने एक हल्की सी हिन्दु लहर बराक घाटी में, बहाने में सफलता प्राप्त की है।

देश की राजधानी दिल्ली एक लम्बे समय से भाजपा का गढ़ रहा है। और इस चुनाव में जब उसने सीट संख्या ४ से ५ कर वोट प्रतिशत को २४.८४ से ४०.१६ तक पहुंचा दिया है तो प्रथम दृष्टि में कोई भी रामलहर के तीव्रता से चलने को स्वीकार करेगा। तथापि, विशुद्ध वास्तविकता का पता तो तब चलता है जब अंतरंग विश्लेषण सामने आ जाय। बाहरी दिल्ली की सीट पर कांग्रेस ने भाजपा को ८६,७९० मतों से परास्त किया तो सदर सीट कांग्रेस के जगदीश टाइटलर ने भाजपा के प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा से छीन ली। करौलबाग सीट भाजपा ने २,५०० वोटों से जीती तो चांदनी चौक सीट मात्र २,७७४ वोटों से के अंतर से कांग्रेस से छीन ली! भाजपा के महान नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी नई दिल्ली सीट से विजयी अवश्य हुए है, पर इस बार यह विजय मात्र १,५८९ वोटों से है तो १९८९ में अंतर ३१,८४१ वोटों का था। ऐसे में आडवाणी की राजेश खन्ना पर यह विजय न गौरवशाली है न ही विश्वस्त, इसीलिए आडवाणीजी ने गुजरात से प्रतिनिधित्व करना निश्चित कर इस सीट को त्यागना उचित समझा। दक्षिण दिल्ली से भाजपा के मदनलाल खुराना ने विजय तो प्राप्त की है पर १९८९ की एक लाख आठ हजार की बढ़त १९९१ में ५०,७२३ वोटों पर ही अटक गयी। सारे देश में हिन्दु लहर की बढ़-चढ़ कर बातें करने वाली भाजपा दिल्ली के अपने गढ़ में लहर चलाने में असफल रही, अपवाद यदि है तो पूर्वी दिल्ली का। यहां से इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद् के श्री बैकुंठलाल शर्मा 'प्रेम' ने कांग्रेस के, दिल्ली की जमीन के नेता श्री एच. के. एल. भगत को ६२ हजार से अधिक वोटों से परास्त किया।

गुजरात राज्य ने भाजपा को २६ में से २० सीटें अवश्य दी है, पर इससे भी बढ़कर कोई बात है तो वह है भाजपा के वोट प्रतिशत को सर्वोच्च शिखर पर अर्थात ५१.४० प्रतिशत की ऊचाई तक पहुंचना। गुजरात में भाजपा की इस विराट सफलता का श्रेय वर्षों से गुजरात को दंगा-राज्य बनाने वाले मुस्लिमों तथा चिमनभाई जैसे बेपेंदे के मुख्यमंत्री को देना होगा। इन तत्वों की करतूतों ने राज्य के हिन्दुओं को झकझोर दिया और इस सबसे उचित लाभ उठाते हुए भाजपा ने यथार्थ में रामलहर चलाने में सफलता प्राप्त की। ऐसी सफलता कि काठियावाड़, मेहसाणा-गांधीनगर आदि क्षेत्रों की ग्राम सीमाओ पर 'हिन्दुराष्ट्र में आपका स्वागत है' के स्वागत-फलक बहुतायत में झलकने लगे। गुजरात की भांति ही उत्तरप्रदेश के मुसलमान और वाचाल घमण्डी मुख्यमंत्री मुलायमसिंह यादव ही प्रदेश में भाजपा का राज्याभिषेक करने के सही भागी है। राज्य की जिस सशस्त्र शक्ति का प्रयोग मुलायमसिंह ने हिन्दु धर्मावलम्बियों के विरुद्ध किया उससे कहीं अधिक हिंसक उनकी वह जिव्हा रही जिसने मुसलमानों को आत्मरक्षा के नाम पर अवैधानिक शस्त्र रखने के लिए खुले आम उकसाया। और मुलायम की इस विष प्रयोगी जिव्हा का असर उल्टा हुआ आज उनका राजनीतिक जीवन ही संकट में पड़ गया है। स्वतंत्रतापूर्व से दंगों के लिए कुख्यात, पाकिस्तान के विष बीज को बोने वाले उत्तरप्रदेश के मुसलमानों ने इस चुनाव में अभूतपूर्व चोट खायी है। जहर उगलने की बदनामी से नाम बनाये इमाम बुखारी, ऐन चुनावी मौके पर जसद की छोड़ उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद से हिजरत कर बिहार के किशनगंज में जद के प्रत्याशी के रुप में चुनाव लड़ने वाले सैयद शहाबुद्दीन, देवबंदी स्कूल के कांग्रेसी नेता असद मदनी, बाबरी मसजिद एक्शन कमेटी के सदर मुजफ्फर हुसैन किछौछवी, शिया नेता मौलाना कल्बे सादिक आदि मुस्लिम नेता उत्तरप्रदेश के मुसलमानों को अपने बयानो से ऐसे परेशान कर रहे थे जैसे किसी साप्ताहिक हाट-बाजार में चार-छह व्यावसायी गरीब आदिवासी से खींचातानी करते हैं। परिणामतः प्रदेश का मुस्लिम शायद पहली बार नेतृत्व-विहीन रहा। ऐसे में स्थानीय रुप में जहां-जहां धर्मनिरपेक्षवादी नेता मुस्लिम मतों का विभाजन रोक पाये वहां-वहां उन्होंने सीटें हथियाली जैसे अकबरपुर, आजमगढ़, लालगंज, जौनपुर, मछली शहर, इलाहाबाद आदि पूर्वी उत्तरप्रदेश की सीटें तो रुहेलखण्ड में मुरादाबाद, संभल की सीटें। इसके विपरीत जहां-जहां मुस्लिम वोटों की गठरी बंध नहीं सकी वहां-वहां उन्हें मुंह की खानी पड़ी। जैसे अयोध्या, (फैजाबाद) सहित उसे घेरने वाली बहराइच, कौसरगंज, बलरामपुर, गोंडा, डुमरियागंज, बस्ती, सुल्तानपुर की सीटें और रुहेलखण्ड की अमरोहा, बरेली, बदायूं की सीटें। इस प्रकार भले ही भाजपा ने मात्र ३३ प्रतिशत वोटों से २११ विधानसभा सीटें जीतकर लखनौ में राजपाट पाया हो और लोकसभा की ८५ मे से ५० पर अधिकार किया हो और उसका वोट प्रतिशत ८.३० से ३२.९० पर पहुंच गया हो फिर भी उसकी विजय पूरे प्रदेश में एक समान नहीं रहीं। पहाड़ी प्रदेश के उत्तराचल में, उत्तराखण्ड-राज्य के निर्माण की भाजपा द्वारा चलायी गयी लहर ने अभूतपूर्व विजय दिलायी, तो बुन्देलखण्ड में भाजपा ने स्थिति बनाये रखने में सफलता प्राप्त की। रुहेलखण्ड में भाजपा ने मैदान मारा तो पश्चिम उत्तरप्रदेश के जाट बहुलगढ़ तक को भेद दिया। पर मध्य उत्तरप्रदेश में स्थिति सामान्य रही तो पूर्वी उत्तरप्रदेश में असफलता हाथ लगी। और तो और मुरादाबाद में, जन्मभूमि संघर्ष के सेनापति अशोक सिंहल के भाई की पराजय और वह भी भीतरघात के कारण होना रामलहर के प्रति भाव-भावनाओ के सम्बन्ध में आशंकाओं को जन्म देती है।

लहरें नवसृष्टि का निर्माण नहीं करती।

चुनाव में विजय तो आखिर विजय है। जिस प्रकार आवश्यक न्यूनतम प्राप्तांकों के पाने वाला छात्र उत्तीर्ण माना जाता है। या यूं कहिए कि, महाबलि राणा सांगा के सेना सागर के सम्मुख हौसलापस्त अपनी सेना को खड़ा करने हेतु विदेशी आक्रांत बाबर ने भूमि पर उड़ेल कर, मदिरा पात्र तोड़ डाले और आजन्म मदिरापान नहीं करने की शपथ खाते हुए सेना के सम्मुख उत्तेजक भाषण देकर-सेना का मनोबल बढ़ा कर युद्ध में जब विजय प्राप्त की तो अन्य बातें गौण होकर 'बाबर की विजय' महान बनी। उसी प्रकार मात्र १ वोट से होने वाली चुनावी विजय सफलता भी विजय ही कहलाती है। पर इस चुनावी विजय के साथ राम लहर-भगवा लहर-हिन्दू लहर को घालमेल करना उचित नहीं है। भाजपा की चतुर्दिक कही जाने वाली विजय के सन्दर्भ में कतिपय अन्य बातें हमारे इस कथन को और अधिक स्पष्ट करती हैं। सामान्यतः यह एक निर्विवाद वास्तविकता मानी जाती है कि, धर्म के अस्तित्व में नारी का योगदान पुरुष की अपेक्षा कहीं अधिक स्वीकार किया जाता है। इस दृष्टि से विगत लोकसभा चुनाव में भाजपा को प्राप्त मतों में पुरुष वर्ग की भागीदारी २२.१ प्र श. और स्त्री वर्ग को १९.१ प्र. श., यही प्रमाणित करती है कि राम जन्म-भूमि की मुक्ति का विचार समाजग्राही नहीं हुआ, 'राम लहर' नहीं बन सका। ठीक यही तर्क नागरी और ग्रामीण मतदान के सम्बन्ध में भी लागू होता है। इस चुनाव में भाजपा ने नागरी मतों में से २८.३ प्र. श. मत प्राप्त कर लिये पर जहां तक ग्रामीण मतदाताओं का प्रश्न है वह मात्र १८.४ प्र. श. मतदाताओं को ही कमल पर मुहर लगाने में सचेष्ट कर पायी। हमारा यह कथन तब अधिक प्रभावी प्रतीत होगा जब हम इस वास्तविकता को ध्यान में रखें कि इस चुनाव में भाजपा ने लोकसभा की कुल ५०३ सीटों में से ४५६ सीटों पर चुनाव लड़ा अर्थात् वह लगभग पूरी तौर से ग्रामीण भारत के चुनावी मैदान में उतर गयी थी। यहां हम भाजपा के पक्ष में भी एक तर्क प्रस्तुत करना आवश्यक समझते है और वह यह कि, देश के मतदाताओं में से तीस वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लोगों में १८.७ प्र. श. ने जहां भाजपा के पक्ष में मतदान किया वहीं तीस वर्ष से कम आयुवर्ग के लोगों में उससे अधिक अर्थात् २५.८ प्र.-श. ने भाजपा की विजय को बलवती बनाया। निश्चय ही इस प्रकार नयी पीढ़ी का भाजपा के राम जन्मभूमि मुक्ति संग्राम की ओर आकृष्ट होना रामलहर के सुखद भविष्य की ओर संकेत करता है।

भाजपा की विजय में रामलहर कम पर अन्य कुछ कारक प्रभावी रहे होने के प्रमाण भी अब प्रकट होने लगे हैं। वास्तविकता से परिचित होने हेतु उनका ज्ञान भी महत्वपूर्ण है। प. बंगाल में भाजपा विगत चुनावों की तुलना में बहुत ही आश्चर्य जनक मतवृद्धि करने में सफल हुई है। उदाहरण के लिए मिदनापुर जिले में ८९ के चुनाव में उसे जहां मात्र ५१०० मत प्राप्त हुए थे वही ९१ के इस चुनाव में दो लाख छब्बीस हजार मतों को उसने अपने पक्ष में कर लिया और इस का कारण था भाजपा ने विगत डेढ़ वर्ष में हिन्दुओं का तब बराबर साथ दिया जब इस अवधि में हिन्दुओं को प्रताड़ित करने वाली १६ गंभीर वारदातें घटी। भाजपा की इसी हिन्दू रक्षक भूमिका के कारण पचकुड़ पश्चिम विधान सभा क्षेत्र में उसे २० हजार से अधिक मत मिले। उल्लेखनीय है कि, यहां राधावल्लभ चक स्थित एक खेल मैदान को लेकर हिन्दू-मुसलमानों में तनातनी के चलते एक वीडियो प्रदर्शन के दौरान एक महिला के शीलहरण के प्रयास से भी क्षोभ व्याप्त था। भाजपा की इस प्रकार की हिन्दुत्वरक्षक भूमिका अभिनंदनीय है, तथापि इतने भर से हम यदि इस क्षेत्र में 'हिन्दू-लहर' या रामलहर की परिकल्पना करे तो उचित न होगा। यदि इन क्षेत्रों में वास्तव में रामलहर प्रभावी होती तो नन्दीग्राम और महिषादल में भाजपा जीत जाती, क्योंकि, इन्हीं दो स्थानों पर रामशिला पूजन के समय रामशिलाओं को तोड़ा गया था और एक घाट भी क्षतिग्रस्त किया गया था।

(शेष आगामी अंक में)

बड़े लोगों के बड़े प्रमाद–(६)

हिन्दू महासभा का गांधी हत्याकांड से संबंध नहीं !

स्पष्ट ही राजनैतिक नेताओं द्वारा अप्रेल से मात्र चुनावी लाभ हेतु उछाला गया यह मुद्दा उत्तर-भारत में जनता को प्रभावित नहीं कर सका। पर महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पंवार ने इस मुद्दे का अनायास हाथ लगे अस्त्र के रुप में पूरा-पूरा प्रयोग किया। और उसका कुछ प्रभाव अवश्य हुआ। क्योंकि, महाराष्ट्र ही वह प्रदेश है जहां गांधीजी की हत्या का निमित बनाकर कतिपय स्वार्थी तत्वों ने अपने पुराने जातीय वैमनस्य को हिंसक रीति से भुनाने की भंयकर एवं घृणित चेष्टा की थी।

चुनावी समर को धर्मयुद्ध के बंधनों से सर्वथा मुक्त रखकर लड़ने पर उतारु राजनीतिक दलों ने गांधी-गोडसे वाले प्रकरण का कोयला घिस-घिस कर उससे सर्वत्र कालिख पोतने का क्रम जब निःसंकोच रुप से चलाया तो पं नाथूराम गोडसे के अनुज श्री गोपाल गोडसे जिन्होंने उसी गांधी हत्या प्रकरण के आरोपी के रुप में आजीवन कारावास भुगता है, कदाचित् और अधिक संयम न रख सके और इस दुर्भाग्यपूर्ण समर में कूद पड़े। हिन्दू महासभा के प्रत्याशी के रुप में रांची (बिहार) से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री गोपाल गोडसे, जैसा कि समाचार पत्र कहते हैं, अपने उस अपराध को न छिपाते हुए साफ-साफ प्रचार करने लगे कि उन्हें गांधीजी की हत्या में शिरकत के लिए वोट मिलना चाहिए, क्योंकि, आजादी के बाद गांधीजी का रूख हिन्दू विरोधी हो गया था। श्री गोपाल गोडसे विद्वान व्यक्ति है और जिस साहस के साथ उन्होंने सपरिवार लंबे समय तक कष्ट सहे उसकी कहानी यथार्थ में लोमहर्षक है। फिर भी उस कहानी को जनता के सम्मुख रख सहानुभूति न बटोरते हुए उन्होंने गांधी-गोडसे प्रकरण के इतिहास के दबे हुए पन्नों को खोलने हेतु सतत् और सफल लेखन किया है। इस विषय पर उनकी पुस्तकें अनेक भाषाओं में धडल्ले से बिक रही है। इस ऐतिहासिक विषय पर चर्चा चलाने हेतु लोगों को प्रेरित करने वाले गोपालजी ने इस विवाद को भी अवसर के रुप में मान पुणें में ४ जून को एक पत्रकार वार्ता का आयोजन किया। वार्ता में आपने एक प्रदीर्घ कथन प्रस्तुत किया और राष्ट्रीय समाचार पत्रों तक ने उसे व्यापक प्रसिद्धि दी। गोपालजी की पत्रकारवार्ता का प्रयास निश्चय ही समयोजित था तथापि, गांधी हत्या के मुद्दे पर चुनाव में अपने पक्ष में मतदान का आग्रह हिन्दू महासभा प्रत्याशी के लिए किसी भी प्रकार उचित माना नहीं जा सकता। हिन्दू महासभा का गांधी हत्या काण्ड से न कोई सम्बन्ध था और न ही न्यायालय ने सांकेतिक रुप में भी इस प्रकार की टिप्पणी भी कभी की। श्री गोपाल गोडसे हिन्दू महासभा के सदस्य, नेता और वर्तमान में राष्ट्रीय महामंत्री ठीक उसी प्रकार एक भारतीय नागरिक के रुप में है जिस प्रकार एक भारतीय नागरिक होने के नाते वह समस्त नागरिक अधिकारों का उपभोग करते हैं और चुनाव में प्रत्याशी बन चुनाव लड़ते हैं। कुछ भावुक लोग भावनावशात् ऐसे सन्दर्भों से हिन्दू महासभा को जोड़ते हो तो उनका भी समर्थन नहीं किया जा सकता। तो ऐसे में संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री का इस प्रकार का चुनावी आहवान या संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बालाराव सावरकर का ९ जून १९९० को आगरा की पत्रकारवार्ता का यह कथन "यदि गोडसे ने गांधी को न मारा होता तो हैदराबाद मुक्त न होता" कैसे समर्थनीय माना जा सकता है ?

श्री गोपाल गोडसे ने अपनी पत्रकार वार्ता में कहा है कि "गांधी हत्या प्रकरण में भाजपा की दोहरी भूमिका है। भाजपा का एक गुट नाथूराम के विचारों को मानता है और नाथूराम के प्रति पार्टी नेताओं के अधिनायकवाद का विरोध करता है। नाथूराम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे। पर गांधीजी की हत्या में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का कोई हाथ नहीं था।" यदि ४३ वर्ष पूर्व की स्थिति का सिंहावलोकन किया जाय तो हम पाते हैं कि, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का नेतृत्व गांधीजी और कांग्रेस के हिन्दू-मुस्लिम एकता की आलोचना करते हुए भी गांधीजी पर बहुत विश्वास रखता था। नवम्बर १९४६ में मुलतान में मुलतान जिला संघ चालक डॉ बलदेव बर्मन ने जब रा स्व. संघ के सर संघ चालक श्री गोलवलकर गुरुजी से पूछा कि "पाकिस्तान का बहुत शोर है। कहीं वह बनाया तो नहीं जायेगा ?" इस पर श्री गुरुजी ने उत्तर दिया कि, "मुझे महात्मा गांधी पर विश्वास है। वे पाकिस्तान का प्रस्ताव कभी नहीं मानेंगे। हो सकता है देश को अविभाजित रखने के लिए जिन्ना द्वारा प्रस्तुत कोई प्रस्ताव मुसलमानों की तुष्टीकरण के लिये शायद वे मान भी ले। पर देश विभाजन वे नहीं होने देंगे।" पर १९४६ पीछे छोड़ १९४७ जैसे-जैसे आगे बढ़ रहा था वैसे-वैसे श्री गुरुजी के विचारों में कुछ विचलन आचरण था जैसे "म गांधी जैसा परश्रेष्ठ पुरुष आत्मा कि संपूर्ण ज्योति को केंद्रित करके अपनी संपूर्ण मानसिक शक्तियों को एकत्रित करके, परस्पर का विरोध तथा संघर्ष मिटाने के हेतु जीवन के पवित्र सिद्धांतों के आधार पर, भिन्न-भिन्न मत चलाने वालों के सदुपदेश सामने रखकर, उसी प्रकार संगम करने में लगा हुआ है। परन्तु उसका परिणाम क्या हो रहा है और क्या होगा इस पर मैं कुछ भी नहीं कहता। इस पर लोग स्वयं ही विचार करें।" यहां तक

कि, मार्च १९४७ के ग. स्व संघ दिल्ली के वार्षिकोत्सव प्रसंग के इस भाषण में उन्होंने कांग्रेस का उल्लेख नहीं करते हुए कहा कि "बड़े-बड़े बुद्धिमान और ख्याति प्राप्त पुरुष एकत्रित होकर सम्मेलनों का आयोजन करते, पारस्पारिक संधि की वार्ता करते तथा अंत में बंटवारे की विधि का विधान रखते दृष्टिगोचर होते हैं।" और इस प्रकार "अपनी माता के अंग-प्रत्यंग काट कर उनके बंटवारे के हेतु परस्पर कलह करने" पर अपनी व्यथा प्रकट करने के साथ ही मानो असहाय हो श्री गुरुजी कह देते, हैं कि, तथाकथित विशाल दृष्टिकोण लेकर संगम की मृगमरीचिका के पीछे दौड़-धूप और दूसरी ओर आघातों से आक्रान्त होकर प्रत्येक घटना से भयभीत होकर, मानों रोता हुआ शरणागत के मार्ग का अनुसरण करता हुआ और रक्षा की भीक्षा मांगता हुआ अपना दुर्बल समाज। कैसा दृश्य है ?" और मात्र पांच माह में विभाजित दृश्य प्रकट हो जाने के उपरान्त भी श्री गुरुजी की गांधीजी के प्रति श्रद्धा और विश्वास में कोई अन्तर नहीं आता और मुंबई शाखा के संक्रांति उत्सव पर दिये अपने बौद्धिक में जनवरी १९४८ में श्री गुरुजी कहते हैं कि "१५ अगस्त १९४७ को भारत का विभाजन हुआ। श्रद्धेय महात्माजी की आशा-आकांक्षाएं ठुकरा कर शासनारूढ़ कांग्रेसी नेताओं ने भारत-विभाजन स्वीकार कर लिया।"

गांधीजी और उन के नेतृत्व में चलने वाली कांग्रेस किसी भी प्रकार देश के विभाजन को स्वीकार नहीं करेगी इस प्रकार का श्री गुरुजी का दृढ़ विश्वास होने से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जहां देश-विभाजन के प्रति एक प्रकार से निश्चिन्त सा रहा वहां अप्रत्यक्ष रूप से ही सही वह कांग्रेस पर आश्वस्त रहा। पश्चिमी पाकिस्तान के परिसरवाला क्षेत्र निश्चय ही एक अपवाद था। संघ के केन्द्रीय नेतृत्व की निश्चिन्तता के होते हुए भी स्थानीय आधार पर पंजाब, सिंध सीमा प्रांत में संघ के लोगों ने आत्मरक्षा की दृष्टि से कुछ तैयारियां की थी। फिर भी कुल मिला कर देश के अन्य प्रदेशों में संघ विभाजन के प्रति उदासीन और कांग्रेस तथा गांधीजी पर भरोसा रख निश्चिन्त रहा। गांधीजी के प्रति संघ जनों में जो श्रद्धाभाव था उसका एक स्वानुभूत उदाहरण इस दृष्टि से दिशा दर्शक हो सकता है। मेरी अवस्था तब चौदह वर्ष की थी और मैं माध्यमिक विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ता था। आरम्भ से ही घर में संघ के साथ ही हिन्दू महासभा का वातावरण होने और मेरी इसमें विशेष रूचि होने के फलस्वरूप मैं विभाजन का घोर विरोधी था। जब ३ जून ४७ को विभाजन की घोषणा के उपरांत देश-विखण्डन का वह दिवस निकट आता गया तब एक दिन मैंने कक्षा में शामपट पर एक सर्प का चित्र बनाया और उसे दो मुंह बताते हुए एक के सामने लिखा 'यदि विभाजन होगा तो वह मेरी छाती पर होगा' और दूसरे मुंह के आगे लिखा 'देश के विभाजन को हमें स्वीकार करना पड़ रहा है।' मेरे द्वारा बनाया गया द्विमुखी सर्प का चित्र जब कक्षा के मेरे सहपाठियों ने देखा तो वे समस्त किशोर सहपाठी मुझ पर इसलिए रूष्ट हुए कि मैंने गांधीजी के सम्बन्ध में एक प्रकार से वह व्यंग्य चित्र बनाया था। हमारा निवास इन्दौर के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की केन्द्र स्थली रामबाग में था और अधिकतर सहपाठी भी उसी मोहल्ले के संघ स्वयं सेवक ही थे। इन संघ स्वयं सेवक-सहपाठियों ने ही मेरी शिकायत अध्यापकजी से की और तत्कालीन परिपाटी के अनुसार मुझे शारीरिक दण्ड मिला।

मुझे क्या दण्ड मिला। अपनी घोर निष्क्रियता और वीर सावरकरजी के सचेतन की घोर उपेक्षा का दण्ड यह हिन्दू समाज भुगत रहा था। पाकिस्तान में पाशविक अत्याचारों की तीव्रता बढती चली गयी। सहसा उसकी प्रतिक्रिया, विशेषकर दिल्ली और पूर्वी पंजाब में अधिक थी। भारत का विभाजन कर पाकिस्तान बनाने वाले मुस्लिम लीगियों के हौसले भारत में इतने बुलंद थे कि १० सितम्बर १९४७ को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल के सभी सदस्यों अर्थात देश के चोटी के नेताओं प्रमुख प्रशासकीय हिन्दू अधिकारियों और हजारों हिन्दुओं का कतलेआम कर लाल किले पर पाकिस्तानी चान्दतारेवाला हरा परचम फहराने का भंयकर मुस्लिमलीगी षड्यन्त्र जब उजागर हुआ तो फिर देश के हिन्दुओं का खून खौलने लगा।

(शेष आगामी अंक में)

आगामी अंक में –

☐ -'हे राम ! तुम ही जानत पीर हमारी !' -लेखमाला की चौथो और अंतिम कड़ी —

लहरें नवसृष्टि का निर्माण नहीं करती !

☐ -'बड़े लोगों के बड़े प्रमाद' --लेखमाला की सातवीं और अन्तिम कड़ी—

विरोधभाव को चिरजीवी शत्रुता में न बदलो !

पा हिन्दु अस्मिता-सम्पादक, स्वामी विक्रम गणेश ओक (विक्रमसिंह) प्राध्यापक द्वारा विश्वास कमर्शियल एजेन्सी, ५५/२, माली मोहल्ला, इन्दौर से मुद्रित एवं 'अभिनव भारत प्रकाशन' १६, एम. आय जी. (शांप कम रेसीडेन्स) नन्दानगर मेनरोड़, इन्दौर मध्यप्रदेश, ४५२००८ से प्रकाशित। दूरभाष : ३७९४८